



बढ़ते कदम

वर्ष-16
अंक-10
2017-18

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी

कविता विशेषांक

भारत के संविधान में राजभाषा

आठवीं अनुसूची के अनुसार भाषाएं

भारत की मुख्य विशेषता यह है कि यहाँ विभिन्नता में एकता है। भारत में विभिन्नता का स्वरूप न केवल भौगोलिक है, बल्कि भाषायी तथा सांस्कृतिक भी है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में 1652 मातृभाषायें प्रचलन में हैं, जबकि संविधान द्वारा 22 भाषाओं को राजभाषा की मान्यता प्रदान की गयी है। संविधान के अनुच्छेद 344 के अंतर्गत पहले केवल 14 भाषाओं को राजभाषा की मान्यता दी गयी थी। 171वाँ संविधान संशोधन द्वारा नेपाली, कोंकणी तथा मणिपुरी को भी राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया। बाद में 92वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 के द्वारा संविधान की आठवीं अनुसूची में चार नई भाषाओं बोडो, डोगरी, मैथिली तथा संथाली को राजभाषा में शामिल कर लिया गया। इस प्रकार अब संविधान में 22 भाषाओं को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। भारत में इन 22 भाषाओं को बोलने वाले लोगों की कुल संख्या लगभग 90% है। इन 22 भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी भी सहायक राजभाषा है और यह मिजोरम, नागालैण्ड तथा मेघालयकी राजभाषा भी है। कुल मिलाकर भारत में 58 भाषाओं में स्कूलों में पढ़ाई की जाती है। संविधान की आठवीं अनुसूची में उन भाषाओं का उल्लेख किया गया है, जिन्हें राजभाषा की संज्ञा दी गई है।

अनुच्छेद 344 (1), 351, आठवीं अनुसूची के अनुसार 22 भाषाएँ हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं:-

- 1 असमिया, बांग्ला, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, उर्दू, तेलुगु, बोडो, डोगरी, मैथिली एवं संथाली।

संविधान के अनुच्छेद 344 में राष्ट्रपति को राजभाषा आयोग को गठित करने का अधिकार दिया गया है। राष्ट्रपति अपने इस अधिकार का प्रयोग प्रत्येक दस वर्ष की अवधि के पश्चात् करेंगे। राजभाषा आयोग में उन भाषाओं के प्रतिनिधियों को शामिल किया जाएगा, जो संविधान की आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट हैं। इस प्रकार राजभाषा आयोग में 18 सदस्य होते हैं।

राजभाषा आयोग का कर्तव्य निम्नलिखित विषयों पर राष्ट्रपति को सिफारिश देना होता है—

- संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी भाषा के अधिकारिक प्रयोग के विषय में,
- संघ के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग के निर्बन्धन के विषय में,
- उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय की कार्यवाहियों में और संघ की तथा राज्य के अधिनियमों तथा उनके अधीन बनाये गये नियमों में प्रयोग की जाने वाली भाषा के विषय में,
- संघ के किसी एक या अधिक उल्लिखित प्रयोजनों के लिए प्रयोग किये जाने वाले अंकों के विषय में,
- संघ की राजभाषा तथा संघ और किसी राज्य के बीच अथवा एक राज्य तथा दूसरे राज्यों के बीच पत्राचार की भाषा तथा उनके प्रयोग के विषय में, और संघ की राजभाषा के बारे में या किसी अन्य विषय में, जो राष्ट्रपति आयोग को सौंपे।

विषय वस्तु

इस अंक के कवि

— सुधांशु कुमार विश्वास —	3
— पुरुषोत्तम राजमणी	4
— शैलेंद्रराम	6
— उमेश कुमार मोदी	8
— विनय कुमार झा	10
— सच्चिदानंद	12
— इंद्र ज्योति राय	14
— श्रीमती डेजी सरकार विश्वास	15
— अरुण कुमार झा	16
— विजय कुमार	17

चित्र विथिका 19-20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं
इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्व रेलवे/मालदा
फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)
Email – rajbhasha.malda@gmail.com

कविता क्या है?

कविता क्या है? अगर हम कविता या साहित्य की विधा काव्य की विवेचना करें तो आचार्य रामचंद्र शुक्ल के शब्दों में कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जब कवि "भावनाओं की प्रसव" से गुजरते हैं तो कविताएं प्रस्फुटित होती हैं। कविता के द्वारा हम संसार के सुख, दुःख, आनन्द और क्लेश आदि यथार्थ रूप से अनुभव कर सकते हैं। हृदयों को द्रवीभूत करके उन्हें अपने स्वाभाविक धर्म पर लाने का सामर्थ्य काव्य में ही है। प्रायः लोग कहा करते हैं कि कविता का अन्तिम उद्देश्य मनोरंजन है पर मनोरंजन कविता का अन्तिम उद्देश्य नहीं है। कविता पढ़ते समय मनोरंजन अवश्य होता है, पर इसके सिवा कुछ समस्याएँ भी होती हैं जिनके बारे में काव्य के माध्यम से कवि आम जनमानस के मन मस्तिष्क पर अपनी छाप छोड़ने की कोशिश करता है। सिर्फ मनोरंजन करना कविता का प्रधान गुण है ऐसा नहीं है।

कविता सृष्टि-सौन्दर्य का अनुभव कराती है और मनुष्य को सुन्दर वस्तुओं में अनुरक्त करती है जो कविता रमणी के रूप माधुर्य से हमें आह्लादित करती है वही उसके अन्तःकरण की सुन्दरता और कोमलता आदि की मनोहारिणी छाया दिखा कर मुग्ध भी करती है। भौतिक सौन्दर्य के अवलोकन से हमारी आत्मा को जिस प्रकार सन्तोष होता है उसी प्रकार कविता से मानसिक सौन्दर्य भी अभिभूत होता है। कविता का उद्गार, उदार और निःस्वार्थ हृदय की उपज है।

कविता की बोली और साधारण बोली में बड़ा अन्तर है। भाव-सौन्दर्य और नाद-सौन्दर्य दोनों के संयोग से कविता की सृष्टि होती है। इसके बिना कविता करना अथवा केवल इसी को सर्वस्व मानकर कविता करने की कोशिश करना, निष्फल प्रयास होगा। नाद-सौन्दर्य के साथ भाव-सौन्दर्य भी होना चाहिए।

जयशंकर प्रसाद ने सत्य की अनुभूति को ही कविता माना है। संसार के सुख-दुःख से परे कविता का मधुर और अनूठा संसार मनुष्य को सुख—सन्तोष प्रदान करता है वे इसी काव्य जगत में डूबे रहने की कामना करते हुए कहते हैं -

ले चल मुझे भुलावा दे कर मेरे नाविक धीरे-धीरे
जिस निर्जन में सागर लहरी, अम्बर के कानों में गहरी
निश्चल प्रेम कथा कहती हो तेज कोलाहल की अवनि रे।

सुधांशु कुमार विश्वास

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक	परामर्श	प्रधान संपादक	संपादक	कार्यकारी संपादक	सहयोग
मोहित सिन्हा मंडल रेल प्रबंधक	विजय कुमार साहू अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक	सुधांशु कुमार विश्वास राजभाषा अधिकारी(प्रा.)	सच्चिदानंद व. अनुवादक	कैलाश चंद्र धारिया व. अनुवादक	इंद्र ज्योति राय क. अनुवादक

रोजगार समाचार

बेरोजगारी, राजनीति की बिसात पर,
एक चुनावी मोहरा है।
कहीं कोई आशा की किरण नहीं
बस कोहरा ही कोहरा है।
किंतु, राजनीति स्वयं एक उद्योग है
जहां दिन ही दिन होती है /कभी रात नहीं ,
इसलिए चिंता की कोई बात नहीं।

तो राजनीति के इस उद्योग में
हमेशा बहाली रहता है
ना घुस, ना पैरवी, /बस शिक्षा के नाम पर
भाषण अगर दे सको,
बिना रसीद का चंदा ले सको,
तो समझो नौकरी पक्की
जब चाहो कर लो जॉइन
हमेशा जगह खाली रहता है।

तो बेकारी में राजनीति करने लगो
कोई काम नहीं है फिर भी
इधर उधर दौड़ने लगो।
मिले जो करने का खर्च जनता पर,
उससे अपना घर भरने लगो।

क्योंकि इसमें वेतन का सवाल नहीं,
लूटो जितना लूट सको कोई बवाल नहीं,
अगर पाँच वर्ष के लिए भी
दिल्ली या पटना पहुंच गए तो,
तीन पुस्त तक कोई मलाल नहीं।
कुछ दिन बाद तुम
जनता के लिए जनता द्वारा चुने गए
जनप्रतिनिधि हो जाओगे
दीन दुनिया से बेखबर

पुरुषोत्तम राजमणि



श्री पुरुषोत्तम राजमणि पूर्व
रेलवे, मालदा मंडल के मालदा
टाउन स्टेशन पर वरिष्ठ गाड़ी
लिपिक के पद पर कार्यरत है। आप

मालदा के उदीयमान कवि एवं साहित्यसृजक हैं। अपनी रेल
सेवा के साथ साथ साहित्य साधना में भी पर्याप्त समय देते हैं।

मुंगेर बिहार के रहने वाले श्री राजमणि की प्रारंभिक
शिक्षा मुंगेर में संपन्न हुई और इन्होंने वर्ष 2012 ई. में बतौर
गाड़ी लिपिक मालदा मंडल में अपना योगदान दिया।

इनकी रुचि बचपन से ही कविता लेखन के प्रति रही
है। इनकी रचनायें मंडल की मासिक पत्रिका बढ़ते कदम में
नियमित रूप से प्रकाशित होती है।

फिर रुतवा होगा पैसा होगा,
संग दो या चार हम जैसा होगा।
पटना दिल्ली दौड़ते रहो,
दूसरों की उबली मछली
अपनी काढ़ाई में छौकते रहो।
ना VRS की चिंता न रिटायरमेंट का डर
जब तक मर्जी काम कर।

इसमें VRS होता नहीं
रिटायरमेंट के बाद भी कोई रोता नहीं।
क्योंकि इस विभाग में
रिटायरमेंट नहीं सन्यास लिया जाता है,
और पेंशन के तौर पर
किसी प्रदेश का राज्यपाल या
बोर्ड का अध्यक्ष बना दिया जाता है।

*****क्षणिकाएं*****

पोस्टर

100 घायल 10 की मौत
 शहर की गलियों में गोली चली है
 आपसी मतभेद को भुलाकर
 सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखें
 चौराहे पर एक पोस्टर लगी है।
 भूख से बिलबिलाते लोग
 पानी के लिए घंटों से कतार में लगे हैं।
 देंगे हर हाथ को काम
 हर खेत को पानी
 अखबार की सुर्खियों में रोज आने लगे हैं।

मोहरे

स्वर्ण, अछूत, आदिवासी,
 राजनीति की बिसात पर
 चुनावी मोहरे बिछी है
 मिली है जबसे आरक्षण
 और सुरक्षा की गारंटी
 सामूहिक नरसंहार की घटना बढ़ी है।

योजना

सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण पर
 करोड़ों की योजनाएं बनते हैं,
 सूखे से फटी दरार, और
 बाढ़ का अथाह पानी क्या होता है
 हर वर्ष इन की सच्ची कहानी कहते हैं।

प्रश्न

नित घर मैं बहुयें जला दी जाती है....
 सड़कों पर चिल्लाती है बेटीयाँ
 बचाओ बचाओ ।
 क्या यही दिन देखने को
 टीवी पर रोज बोला जाता है
 बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ ?

शैलेंद्र राम

श्री शैलेंद्र राम पूर्व रेलवे,मालदा मंडल के मालदा टाउन स्टेशन पर वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर/समाडि के अधीन हेल्पर के पद पर कार्यरत है। बोदरा,गोड्डा झारखंड के रहने वाले श्री राम की प्रारंभिक शिक्षा गोड्डा में संपन्न हुई और इन्होंने वर्ष 2012 ई. में बतौर हेल्पर मालदा मंडल में अपना योगदान दिया। अपने आस पास गरीबी,मानवता का शोषण और निरीह जनों पर शासन की बर्बरता से प्रेरित होकर कविता लेखन के प्रति इनका लगाव बढ़ा। इनकी रचनायें मंडल की मासिक पत्रिका बढ़ते कदम में नियमित रूप से प्रकाशित होती है।



गूंगे, लंगड़े और अंधे

फलते यहां हम तीन पौधे
गूंगे लंगड़े और अंधे
रहो खड़े या गिरो मुंह औंधे
चलने तुम्हें हमीं के हैं कंधे

मनहर होते हैं हम सब
करते हैं स्वांग जब तक।
चलोगे संग अंधे गिरोगे मुंह औंधे
देखकर सब हंसेंगे,ना कोई हाथ देंगे

उल्टे ही सिर चढ़ेंगे,चाहत पूरी जो करेंगे।
रहो संग गूंगे तो कुछ ना कहेंगे
खिचड़ी अंदर पकेगी, गर्मी सबको लगेगी
खाएंगे जीजा साले ,बाकी कुछ भाग्य वाले

न लो मुझसे पंगे,यह लंगड़े कहेंगे
जो यूं तुम करोगे ,तो हम कहां रहेंगे
ना शीघ्र धीरे तो चलेंगे, पर शर्त यदि मन मिलेंगे।

हम यूं ही चलेंगे टेढ़े कभी सीधे
हो क्या जपते, यदि कोई रास्ते
तो चाल चल देख ले
जरा हम भी देख ले।

त्रस्त मजदूर

सारे मजदूर है त्रस्त, नेता है मौका परस्त
सत्ता को नहीं है फुर्सत, पूंजीपति सब हैं व्यस्त
गरीबों का है जीवन अस्त, सारे मजदूर हैं त्रस्त

मान जिसे ऊपर का वर, जीते जीवन हो मजबूर
छोटा घर पर बड़ा उर, घर छोड़ जाते हैं दूर
आते घर जब सूरज अस्त, सारे मजदूर हैं त्रस्त

बांधकर कुछ चना-चबेना, काम का कोई नहीं ठिकाना
नहीं किसी से लेना देना, पहन के अंबर फटा पुराना
फाकाकशी में जीवन पस्त, सारे मजदूर हैं त्रस्त

जिंदगी ही परोपकार, साक्षात् ज्यों हो शंकर
मर्त्यलोक के कुछ नामवर, कुछ लटके-झटके दिखा
बन जाते हैं वरद हस्त, सारे मजदूर हैं त्रस्त

महल जिस कर से हैं उठते, पसीने से गारे बनते
वही हो ऊपर जब इठलाते, उसी हस्त की हंसी उड़ाते
व्यथा कथा क्या कहूं अनंत, सारे मजदूर हैं त्रस्त

माना है ये अभी असक्त, नहीं चाहते अस्त्र-शस्त्र
पर हो जाने पर कुपित, राम नाम फिर होगा सत्
शीघ्र संभालो अब भी वक्त, सारे मजदूर हैं त्रस्त

कुछ करो अब सोचो मत, सोचने का गया वक्त
हो जाओ सब एक मत, तभी मिटेगा सारा दुर्गत
बोलो सब मिल जय जगत, सारे मजदूर हैं त्रस्त



— शैलेंद्र राम

उमेश कुमार मोदी

श्री उमेश कुमार मोदी पूर्व रेलवे, मालदा मंडल के साहिबगंज स्टेशन पर वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर/लोको के अधीन लोको पायलट के पद पर कार्यरत है। रणग्राम, तारापुर, बिहार के रहने वाले श्री मोदी की प्रारंभिक शिक्षा गांव में संपन्न हुई और बाद में इन्होंने उच्च शिक्षा भागलपुर व मुंगेर से प्राप्त की। मालदा मंडल के साहिबगंज स्टेशन स्थित लोको शेड राजभाषा कार्यान्वयन समिति के ये संयोजक है। अपने आस पास गरीबी, मानवता का शोषण और समाज में व्याप्त कुरितियों व बर्बरता से प्रेरित होकर कविता लेखन के प्रति इनका लगाव बढ़ा। इनकी पहली काव्य रचना मैं सुकसुकिया हूं है। इनकी रचनायें मंडल की मासिक पत्रिका बढ़ते कदम में नियमित रूप से प्रकाशित होती है।



विकृत सभ्यता

विकृत सभ्यता कृतित्व कृशंस, दहला मानव छाया नृशंस
बदल गई सत्यता की परिभाषा, सभ्य समाज की असभ्य अभिलाषा
हुई विस्मृत सभ्यता संस्कृति शालीन, परिवर्धित हुई है क्रूर पिपासा।
नित्य नूतन रच रहा विध्वंस, विकृत सभ्यता कृतित्व कृशंस

रिक्त जेब उदर भले ही खाली हैं, होठों पर नित्य सजती लाली है,
गढ़ बाहु नितंब टैटू बेढंग, वाला बनी वन व्याली है
दे रही दना दन दंश, विकृत सभ्यता कृतित्व कृशंस

मुर्गा भर रहा है बांग, देख कमनीय नग्न टांग
क्षिप्रपट तुंग उन्नत उरोज, रच रहा निकृष्ट कुत्सित स्वांग
विकल विदग्ध विधि विभ्रंश, विकृत सभ्यता कृतित्व कृशंस

कोई सुचित्रा कोई सुलेखा, कोई सती सीता सुरैता
कहां रामायण गीता लेखा, कहां बैठा है व्यर्थ विवेका
कहां रमा है परमहंस, विकृत सभ्यता कृतित्व कृशंस

उमेश कर दे कुछ ऐसी रचना, हो विकृति की विभत्स भर्त्सना
अतीत अस्मिता आहत अपंग, लुटे लिप्सा मिटे तृष्णा
खोज रहा क्या जल में हंस, विकृत सभ्यता कृतित्व कृशंस।

होगी कब हिंदी आजाद

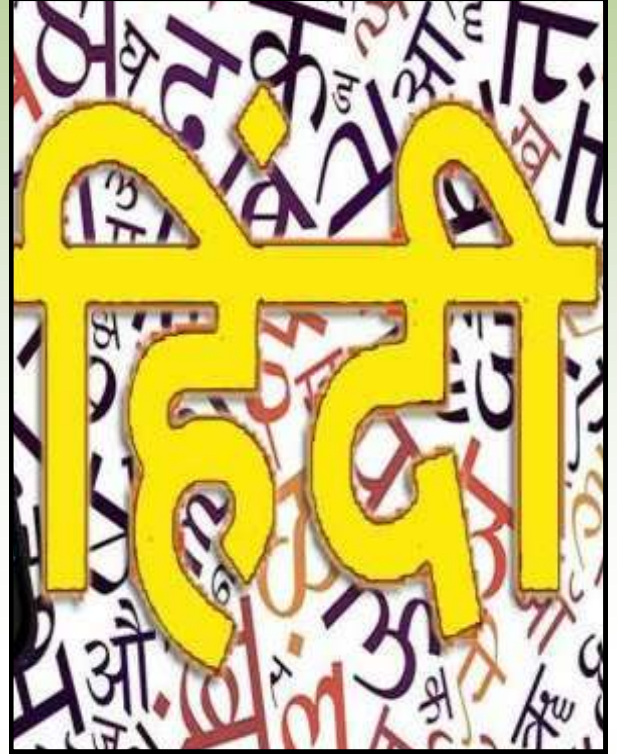
ऐ देश के कर्णधारों, समय शक्ति क्यों करते बर्बाद ।
हिंदुस्तान आजाद हुआ है होगी हिंदी कब आजाद ॥

हिंदुस्तान में अलबत्ता, मुंबई से कोलकाता
अंग्रेजी की चल रही है सर्वत्र एकछत्र सत्ता
शहर शहर या गांव गांव छाया है यही अवसाद ।
हिंदुस्तान आजाद हुआ है होगी हिंदी कब आजाद ॥

हिंदी पग में आंग्ल बेड़ी है, करबद्ध कराल क्रूर कड़ी है
विवश वैधव्या विकल्प पड़ी है, आज इम्तिहान की घड़ी है
वीर बज उठी प्रणभेरी है, मिटा प्रवर प्रयोग प्रमाद ।
हिंदुस्तान आजाद हुआ है होगी हिंदी कब आजाद ॥

उधर हिमालय हुंकार रहा है इधर उदधि दहाड़ रहा है
भाषाई दासता उखाड़ फेंकने को, जन-जन को ललकार रहा है
दिग दिगंत गूंज रहा है आज यही स्वर नाद ।
हिंदुस्तान आजाद हुआ है, होगी हिंदी कब आजाद ॥

करके मन, चित्त, आत्मा, शुद्ध, छेड़ लड़ाई का तीसरा युद्ध
उठो उठो ए वीर सपूत वर्ग, अपवर्ग, आबोध प्रबुद्ध
ले तिलक इस मिट्टी का, बढ़ आगे कर शंखनाद ।
हिंदुस्तान आजाद हुआ है होगी हिंदी कब आजाद ॥



उमेश कुमार मोदी

विनय कुमार झा



श्री विनय कुमार झा पूर्व रेलवे, मालदा मंडल के साहिबगंज स्टेशन पर वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर/बिजली के अधीन कार्यरत है। सुपौल बिहार के रहने वाले श्री झा की प्रारंभिक शिक्षा करजाइन बाजार सुपौल में संपन्न हुई और इन्होंने वर्ष 2012 ई. में मालदा मंडल में अपना योगदान दिया।

अपने आस पास घटने वाली घटनाओं से प्रेरित होकर कविता लेखन के प्रति इनका लगाव बढ़ा। कविता रचना के साथ साथ विभिन्न मंचों पर काव्य पाठ में भी ये सिद्धहस्त है। मालदा मंडल के साहिबगंज स्टेशन स्थित स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति के ये संयोजक है।

हिंदी में अपना अधिकाधिक कार्य संपन्न करने के लिए एवं अन्य को प्रेरित करने के लिए इन्हें राजभाषा सारथी के रूप में चुना गया था। इनकी रचनायें मंडल की मासिक पत्रिका बढ़ते कदम में नियमित रूप से प्रकाशित होती है।

कफन तिरंगा हो

जिस देश में गंगा हो, राष्ट्रध्वज तिरंगा हो
जहां फूल अमन का खिले कोई ना दंगा हो
झरना हो, पतझड़ हो, नित प्रति टपकती हो
सागर की लहरों से संदेश यह देती हो
आज आगे हर दम बढ़ना हाथों में तिरंगा हो
जिस जिस देश में गंगा हो राष्ट्रध्वज तिरंगा

मन नाजुक है मेरा, दिल में भी तिरंगा हो
हम भूले नहीं गोधरा, कश्मीर का वह मंजर
सब देखता हूं हर पल फिर भी मैं अंधा हूं
जिस देश में गंगा हो, राष्ट्रध्वज तिरंगा हो

यमुना पावन पुनीत गोदावरी बहती है
तरंग लिए कृष्णा कावेरी बहती है
रहे हरदम अमन चैन ना कोई पंगा हो
जिस जिस देश में गंगा हो राष्ट्र ध्वज तिरंगा हो

दिल सागर सा गहरा, सर शिखर हिमालय हो
खतरों से खेलते हैं हम पीछे नहीं हटते हैं
मिटने न दूँ स्मिता बहे खून का कतरा हो
जिस जिस देश में गंगा हो राष्ट्र ध्वज तिरंगा हो

सामने हो दुश्मन परवाह नहीं करते
हो खून से लतपत तन, पर कदम नहीं रुक सकते
उद्धोष हो भारत में हाथ में झंडा हो
जिस देश में गंगा हो राष्ट्रध्वज तिरंगा हो



जब सीमा पर जाऊँ संगीन हो हाथों में
हम पथ से ना हो विचलित देश प्रेम का जज्बा हो
सर तिलक हो माटी बन हाथों में तिरंगा हो
जिस देश में गंगा हो राष्ट्रध्वज तिरंगा हो

प्यारा वतन

ढा न पाये कोई यूँ सितम दोस्तों
यह है अपना प्यारा सा वतन दोस्तों
इनकी आँचल संवारे है बचपन मेरा
नाम इनकी जवानी तू कर दे मेरी
कभी पीछे न करना कदम ए दोस्तों
यह है अपना प्यारा सा वतन दोस्तों

अपनी माटी का गौरव हूँ रखना याद सदा
कोई छूने न पाये यह पावन धरा
करना हिफाजत तू खेल जान पर इसकी
यह है जननी जन्मभूमि अपनी
बढ़ती है रौनक मेरे शान में इससे
ढा न पाये कोई सितम दोस्तों
यह है अपना प्यारा सा वतन दोस्तों

—- विनय कुमार झा



सच्चिदानंद जिज्ञासु

श्री सच्चिदानंद "जिज्ञासु" पूर्व रेलवे,मालदा मंडल के राजभाषा विभाग में वरिष्ठ अनुवादक के पद पर कार्यरत है। धनमा जमुई, बिहार में जन्मे एवं इनकी प्रारंभिक शिक्षा पाटम,मुंगेर में संपन्न हुई। इन्होंने वर्ष 1983 ई. में बतौर तार बाबू रेल सेवा में अपना योगदान दिया।

इसके बाद 1990 में राजभाषा विभाग में राजभाषा सहायक के पद पर सियालदह मंडल में अपना योगदान दिया। आप 1964 ई.से ही लेखन से जुड़े हुए है। अपने आस पास घटने वाली घटनाओं से प्रेरित होकर कविता लेखन के प्रति इनका लगाव बढ़ा। 1987 में इनकी पहली काव्य रचना *चिंतन* प्रकाशित हुई। इनकी रचनायें मंडल की मासिक पत्रिका *बढ़ते कदम* में नियमित रूप से प्रकाशित होती है जिनके ये संपादक भी हैं।



ईश्वर कुछ मुझसे अच्छा करवा

ईश्वर कुछ मुझसे अच्छा करवा
जब भी भटकूं मार्ग से मुझे सही पथ दिखा
जब भी मन में आसक्ति आए
मेरे मन में भक्ति जगा।

जब भी मेरे दिल में शत्रुता उपजे
मुझ में करुणा का सागर बहा
जब भी मन कंचन कामिनी के लिए तड़पे
तुम मुझमें बैराग्य भर।

मेरे मन की इर्ष्या,क्रोध,लोभ-लालच को
तू दया प्रेम और सहिष्णुता में बदल
ईश्वर! कुछ मुझसे अच्छा करवा

यह पापी मन तेरे चरणों में ही लगा रहे
मनुष्य योनि में जन्म लेने का साध पूरे
मुझसे किसी का ना अहित हो
मेरे दिल में किसी के प्रति भी पाप न उपजे

बस करुणा सागर ही उमड़ता रहे
सारे जग वासी से बैर भाव छूटे
ऐसा सुपथ दिखा-
ईश्वर! मुझसे कुछ ऐसा चमत्कार करा
पीढ़ियों तक पथ आलोकित रहे
ऐसा मेरा भाग्य बना,
प्रभु! मुझसे कुछ अच्छा करवा।



इत्ती सी अभिलाषा

न मैं पी.एम न जी.एम बनने के लिए लालायित हूं।
 ना टाटा, डालमिया, अंबानी बनने की ही मेरी ख्वाहिश है
 ना हीरो, खिलाड़ी या गायक बनकर शोहरत बटोरने की चाहत है,
 ना तो देशरत्न, नोबेल पाने की तमन्ना है,
 संसार की न कोई संपदा सुख पाने की इच्छा ही शेष है।
 मैं एक अल्पज्ञ, कवि, लेखक, व्यंगकार हूं
 लोगों को जागरूक बनाने, समाज से जात-पात हटाने

दर्जनों पुस्तकें लिख चुका हूं और लिखना है।
 निर्धनों के लिए पाठशाला, अस्पताल
 बूढ़े, बेसहारों, अबला हेतु निकेतन बनाना है
 आजीवन दीन दुखियों की सेवा में सहर्ष
 तन मन धन न्योक्षावर करना है
 बस इत्ती सी अभिलाषा है
 हे प्रभु मुझे दो ऐसी भक्ति, शक्ति, बुद्धि
 अपनी अभिलाषा पूरी कर
 इस नश्वर संसार से खुशी-खुशी विदा ले सकूं।

मौन धारण

चोरों की बस्ती में आए थे हम,
 अब लुटेरों की बस्ती में आ गए हैं हम,
 हर जुल्म को जानकर भी
 अनजान बनने पर मजबूर हैं हम।

जबसे भगवान के शरणागत हुए हैं हम
 तभी से मौन धारण किए हुए हैं हम,
 करनी का फल भुगतना ही पड़ेगा
 मानकर ऐसा ऑफिस, समाज का

हर अन्याय, अत्याचार भुला दिए हैं हम
 लड़े तो लड़े किसके विरुद्ध ?
 लाखों में एक आध ही इंसान बचे हुए हैं।
 हर ओर अन्याय, बाहुबली का बोलबाला है
 कोर्ट कचहरी सरकार कोई नहीं
 दे पा रही इन्हें सजा है।

सच्चिदानंद "जिज्ञासु"

इन्द्रज्योति राय

श्री इन्द्रज्योति राय पूर्व रेलवे, मालदा मंडल के राजभाषा विभाग में कनिष्ठ अनुवादक के पद पर कार्यरत हैं। भागलपुर, बिहार में जन्मे एवं इनकी प्रारंभिक शिक्षा दुमका, झारखंड में संपन्न हुई।

इन्होंने वर्ष 2010 ई. में बतौर कनिष्ठ अनुवादक राजभाषा विभाग में मालदा मंडल में अपना योगदान दिया। बचपन से ही लेखन से जुड़े हुए हैं। समाज में घटने वाली समसामयिक घटनाओं से प्रेरित होकर कविता लिखते हैं। 2010 में इनकी पहली काव्य रचना 'पर्यावरण हूँ' प्रकाशित हुई थी।



मेरी बेटी थोड़ी बड़ी हो गई है

मेरी बेटी थोड़ी सी बड़ी हो गई है
कुछ जिद्दी, कुछ नक् चढ़ी हो गई है
हाँ, मेरी बेटी थोड़ी सी बड़ी हो गई है

अब अपनी हर बात मनवाने लगी है
हमको ही अब वो समझाने लगी है
हर दिन नई नई फरमाइशें होती हैं
लगता है कि फरमाइशों की झड़ी हो गई है
मेरी बेटी थोड़ी सी बड़ी हो गई है

अगर डांटता हूँ तो आखें दिखाती है
खुद ही गुस्सा करके रूठ जाती है
उसको मनाना बहुत मुश्किल होता है
गुस्से में कभी पटाखा कभी फूलझड़ी हो गई है
मेरी बेटी थोड़ी सी बड़ी हो गई है

जब वो हंसती है तो मन को मोह लेती है
घर के कोने कोने में उसकी महक होती है
कई बार उसके अजीब से सवाल भी होते हैं
बस अब तो वो जादू की छड़ी हो गई है
मेरी बेटी थोड़ी सी बड़ी हो गई है

घर आते ही दिल उसी को पुकारता है
सपने सारे अब उसी के संवारता है
दुनियाँ में उसको अलग पहचान दिलानी है
मेरे कदम से कदम मिलाकर वो खड़ी हो गई है
मेरी बेटी थोड़ी सी बड़ी हो गई है

— इन्द्रज्योति राय

श्रीमती डेजी सरकार विश्वास

श्रीमती डेजी सरकार विश्वास पूर्व रेलवे, मालदा मंडल के कार्मिक विभाग में कार्यालय अधीक्षक के पद पर कार्यरत है। इनका जन्म पाकुड़, झारखंड में हुआ एवं इनकी प्रारंभिक शिक्षा मालदा मंडल के बड़हरवा में संपन्न हुई। इन्होंने वर्ष 2012 ई. में बतौर कनिष्ठ लिपिक के रूप में कार्मिक विभाग में मालदा मंडल में अपना योगदान दिया। बचपन से ही लेखन में इनकी रुचि रही है। समाज में घटने वाली समसामयिक घटनाओं से प्रेरित होकर ये प्रतिवादी कविता लिखती हैं। 2001 में इनकी पहली काव्य रचना प्रकृति और मैं केंद्रीय विद्यालय मालदा की गृह पत्रिका में प्रकाशित हुई थी।



ईश्वर क्या है

क्या कभी किसी ने ईश्वर को देखा है
या फिर भी उनके होने का एहसास हमें है
इन फूलों में, इन किरणों में
बारिश की छोटी-छोटी बूंदों में
हवाओं में, इन फिजाओं में
प्रकृति के हर नजारों में ईश्वर है।

हमारे दुख में, हमारे सुख में
हमारी हार में, हमारी जीत में

इस धरती के कण कण में
और हमारे मन मंदिर में ईश्वर है।

पर ना जाने क्यों हम
हर वक्त उन्हें ढूँढते रहते हैं,
जो जो हमारे पास है और हमारे साथ है
ना जाने क्यों उसकी तलाश में भटकते हैं।

धरती और बादल

धरती न जाने कब से सूख रही थी
अपना माथा फोड़ रही थी
वह बारिश की चंद बूंदों के लिए
ना जाने कब से तड़प रही थी

सावन के महीने में,
आया बादल का एक टुकड़ा
देख इस बादल को धरती का मन नाच उठा
वह बोली बादलों से, ऐ बादल बरसो तो जरा
तरस रही हूँ कब से मैं इन बूंदों के लिए भला

धरती की सुन इन बातों को
बादल ने कहा, मैं मैं आया हूँ दूर देश से
सिर्फ तुम्हारी प्यास बुझाने
फिर क्या था लग गई बूंदों की झड़ी
जिस पल का था इंतजार आखिर वह आ गई घड़ी

वर्षा की बूंदों को पाकर
खिल उठी यह धरती सारी
बूंदों को पाकर हर्षाए फूल फूल
झूम उठे यह धरती सारी

— श्रीमती डेजी सरकार विश्वास

अरूण कुमार झा

श्री अरूण कुमार झा पूर्व रेलवे, मालदा मंडल के परिचालन विभाग में मुख्य नियंत्रक के पद पर कार्यरत हैं। मूल रूप से भागलपुर, बिहार के रहने वाले श्री झा मालदा मंडल के एक जाने माने कवि भी हैं। इन्होंने वर्ष 1986 ई. में बतौर सहायक स्टेशन मास्टर मनिग्राम स्टेशन पर मालदा मंडल में अपना योगदान दिया।

विज्ञान में स्नातक श्री झा लेखन के अलावे, नाटक, निर्देशन, अभिनय, मंच संचालन से भी जुड़े हुए हैं। उद्घोषक के रूप में आकाशवाणी भागलपुर से इनके कई कार्यक्रम प्रसारित हुए हैं। इनको हिंदी लेखन के लिए कई पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है।



वीर रेलकर्मियों तुम महान हो

वीर रेलकर्मियों तुम महान हो
महान है मां भारती
नित्य अपने खून से उतारते तुम आरती

देश की धमनियों में बहते
रक्त के प्रवाह तुम
समाज के विकास के
सशक्त हो गवाह तुम

शिक्षा और संस्कृति के
प्रबल रहे वाहक तुम
और अर्थतंत्र वृक्ष के
मां हो पालक तुम

निशा की मीठी नींद में
जब समस्त विश्व सो रहा
तब भी रेलकर्मियों का
कर्तव्य निर्वहन हो रहा

अपनी मां पत्नी बेटी
जब बीमार हो
देश की असंख्य मां बेटियों का
करते रहे तिमर हो



कितनी विदाई की
आंसू पीकर तुम
खुशियों के हर्ष में
यात्रियों के संग जी के तुम

बस एक तथ्य पर दृढ़ रहे
की कर्तव्य यही पुकारती
वीर रेलकर्मियों महान तुम
और महान है मां भारती

— अरूण कुमार झा

विजय कुमार

श्री विजय कुमार पूर्व रेलवे, मालदा मंडल के निर्वर्तमान मुख्य निकट निरीक्षक है। साहिबगंज झारखंड के रहने वाले श्री कुमार की प्रारंभिक साहिबगंज में संपन्न हुई और बाद में इन्होंने उच्च शिक्षा भी साहिबगंज कालेज से प्राप्त की।

ये मालदा मंडल के साहिबगंज स्टेशन स्थित राजभाषा कार्यान्वयन समिति के ये संयोजक रह चुके हैं। 1975 ई. में इन्होंने रेल सेवा में योगदान दिया। ये वर्ष 1992 ई. से मंडल के राजभाषा विभाग से जुड़े हुए हैं। इनके जीवन पर माता-पिता व इनके गुरु श्री राजेंद्र प्रसाद ठाकुर का गहरा प्रभाव पड़ा। इनकी पहली काव्य रचना *आह* जो साहिबगंज से प्रकाशित होने वाली पत्रिका *दिशारी* में सन् 1989 में छपी थी। इनकी रचनायें मंडल की मासिक पत्रिका *बढ़ते कदम* में नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं।



प्यार करने दो मुझे

फूल हुलस रहा कचनार है कुक रही कादंबरी
सज गई नदी नहीं पहन नवल पितांबरी
हृदय इजहार है बिहार करने दो मुझे
चेतना के तौर पर झूम प्यार करने दो मुझे

है गुलसिता मधुबन मेरा मधुमास आगमन से यहां
गुलाबी ठंडक में जरा कुछ आवास करने दो मुझे
आम्र तरु पर मंजरियां कचनार खिलखिला गए
मधु ब्रिंग के गुंजार में अनुवाद करने दो मुझे

सवरा सब वन खिला वातावरण सुरभित हुआ
महुआ के टप टप चुआन मधुपान करने दो मुझे
वनांचल के आंचल से आती खुशबू यहां
चंद्रोदय की चंद्रिका में मदहोश होने दो मुझे

आकर प्रकृति के द्वार पर बसंत दस्तक दे रहा
झूमने दो नाचने दो आज प्रियतम आएंगे मेरे
हो रहा हर्षित मधुबन मेरा सजने सवरने दो मुझे
मन के अंतर दीप से आरती उतारने दो मुझे

नैसर्गिक सिंगार से सजी उपहार पाने दो मुझे
 रंग अबीर गुलाल अब उड़ा लेने दो मुझे
 लता गुल्म के बाहों में, झूमा अब झूम हिलोरे लेने दो मुझे
 नवल पुष्प कोमल पत्र दल से पथ सजाने दो मुझे

सज रहे गली कूचे सज रहा सारा जहान
 आज सजन आएंगे मेरे छाया है चहुं और उल्लास
 विरह वेदना के तार से मन झंकृत होने लगा
 प्रमद चित्त से प्रिय मिलन को उत्कंठित होने दो मुझे

हो रहा विह्वल मेरा मन पपीहा के आतुर पिहुक से
 वासंतिक रास के लिए वेणु बजाने जाने दो मुझे
 नूतन उमंग बटोरकर मन मदन के लिए
 अमराइयों के अभिसार में अब खो जाने दो मुझे।

संभल जाओ

ऐलान यह कर दो गद्दारो को
 अब तेरी खैर नहीं होगी
 जयगान करती दसो दिशाएं
 नव ग्रह करता मंगल गान
 नव पल्लवित हुई पावन धरती
 जाग उठा है हिन्दुस्तान

आस्तीन के सांपों का
 विषदंत तोड़ कर रख देंगे
 तैयार खड़े हैं वीर बाकुड़
 तुझे सचेत करते हैं हम
 शेष समय है संभल जाओ
 जयचंद मीर जाफर के वंशज
 अब तेरी खैर नहीं होगी।

—विजय कुमार

शेषांश अगले अंक में

मालदा मंडल द्वारा स्वच्छता पखवाडा 2017 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों हेतु आयोजित पुरस्कार वितरण के दृश्य



मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति मालदा की तिमाही बैठक एवं मंडल की मासिक पत्रिका बढ़ते कदम के विमोचन के दृश्य

